Excerpts of Pankaj Oudhia's Sci-Fi novel titled "Brave Mantora" (Hindi translation)

छत्तीसगढ की बेटी "साहसी मनटोरा"

जैसे ही हेलीकाप्टर का शोर गाँव मे सुनायी दिया बच्चे बाहर भागे। कुछ देर मे उन्होने एक बडे से हेलीकाप्टर को गाँव के ऊपर मँडराते देखा। गाँव वाले समझ गये कि कोई बडी मुसीबत आ गयी है। वे भी बाहर आ गये। गाँव के बाहर एक खाली जगह पर हेलीकाप्टर उतर गया। चारो ओर धूल का बवंडर उठ रहा था और कानफोडू शोर हो रहा था। गाँव की शांति भंग हो चुकी थी। हेलीकाप्टर का दरवाजा खुला तो सैनिको की तरह वेशभूषा वाले कुछ लोग नीचे उतरे और सीधे ही भीड तक पहुँच गये। "मनटोरा, कहाँ है? हमे मिलना है तुरंत।"

दूर जंगल मे हेलीकाप्टर की आवाज मनटोरा ने भी सुनी थी और उसके बैगा बबा ने भी। दोनो घने जंगल मे एक मौसमी झरने से निर्मल जल एकत्र कर थे। बैगा बबा इस जल को अपने रोगियो को देने वाले थे। मनटोरा हमेशा की तरह उनके साथ थी। हेलीकाप्टर की तेज आवाज सुनकर उसके मन मे आया कि क्या आवाजविहीन हेलीकाप्टर नही बनाया जा सकता? या ऐसा हो कि हेलीकाप्टर कही और चले और आवाज कही और सुनायी दे? या फिर हेलीकाप्टर की आवाज एक बक्से मे कैद हो जाये और वापस जाकर बक्से को खोलकर आवाज को छोड दिया जाये।

मनटोरा छत्तीसगढ की बेटी है और छत्तीसगढ जितना मनुष्यो का घर है उससे ज्यादा वनस्पतियो और जीव-जंतुओ का घर है। इंसानी गतिविधियो के कारण किसी भी तरह के शोर से मनटोरा विचलित हो उठती है। उसे लगता है कि पता नही नन्हे पक्षियो पर क्या गुजर रही होगी? हमारी तरह उनके पास हाथ जो नही है जिससे वे कानो को बन्द कर ले और तेज आवाज से बच जाये।

"मनटोरा, ओ मनटोरा।" दूर से आती इस पुकार ने मनटोरा को आभासी दुनिया से वास्तविक दुनिया मे ला दिया। हेलीकाप्टर दूर जा चुका था। जंगल फिर से अपनी आवाज मे शांति का शोर कर रहा था। धीरे-धीरे पुकारने की आवाज पास आती गयी। अब तो आवाज लगाने वाले दिखने भी लगे थे। सात-आठ लोग तेजी से मनटोरा की ओर ही आ रहे थे। उन लोगो की वेशभूषा को देखकर उसे यह समझने मे जरा ही देर नही लगी कि वे कौन लोग है और हेलीकाप्टर क्यो आया है?

“हैलो, मनटोरा, मै भरत हूँ और हमे शर्मा जी ने भेजा है। तुमसे जरुरी बाते करनी है। अभी, तुरंत।“यह कहकर भरत ने सब को पास की चट्टान मे बैठने को कहा। “मनटोरा, राजधानी मे आतंकवादी हमला हो गया है अस्सी से अधिक महत्वपूर्ण लोगो को बन्धक बना लिया गया है। बडी संख्या मे आतंकवादी है और कुछ भी कर गुजरने की तैयारी से आये है। सेना ने इमारत को चारो ओर से घेर लिया है। आतंकवादियो ने तीन बन्धको को मार दिया है। उनसे बात करने की कोशिश हो रही है पर उन्हे उलझाये रखना बहुत मुश्किल है। वे परम्परागत तरीको से बखूबी वाकिफ है। वे हमारी किसी भी चाल मे नही फँसना चाहते है। उन्हे पैसे चाहिये और साथ ही हमारी खदानो से निकाले गये हीरे।

उनकी दूसरी भी माँगे है। वे चाहते है कि अब तक सरकार द्वारा उनके विरुद्ध की गयी कार्यवाही के लिये सरकार का मुखिया कान पकडकर उठक-बैठक करे राष्ट्रीय समाचार चैनलो पर। पागलो की तरह उनकी बाते है और माँगे भी। बीच-बचाव की आस मे घुसे एक पूर्व आतंकवादी को भी उन्होने मार दिया। पूरे शहर मे दहशत है। शर्मा जी चाहते है कि मनटोरा की मदद ली जाये। इसलिये हम तुरंत आ गये।“ भरत ने एक साँस मे ही सब कुछ कह दिया। उसकी आँखो मे दहशत के चिन्ह साफ दिखते थे।

बाते चल ही रही थी कि बैगा बबा ने झरने से एकत्र किया हुआ पानी सबसे सामने रखा और पीने को कहा। भरत ने तो खुशी-खुशी पानी पी लिया पर उसके साथ आये लोगो ने अपनी जेबो से मिनरल वाटर की बोतले निकालकर दिखायी और कहा कि हमे प्यास नही लगी है। पर जब बैगा बबा ने बहुत आग्रह किया तो वे धीरे से बोले कि कही बाहर का पानी पीने से हमारा स्वास्थ्य तो नही बिगड जायेगा। पता नही कहाँ से यह पानी बहकर आ रहा होगा। भरत ने स्थिति को सम्भाला और कहा कि पी लो ऐसा पानी कही नही मिलेगा।

उसके साथी पानी पीने लगे। थोडा रुककर और पानी माँगा। फिर और। यह क्रम तब तक चलता रहा जब तक कि पानी खत्म नही हो गया। “हमने तो पहली बार ऐसा कुछ पीया है।“ वे बोले तो सब हँस पडे। बैगा बबा ने उनसे बोतल वाला पानी माँगा और फिर बोतल खोलकर सूँघने लगे। उन्होने गहरी साँस अन्दर ली फिर निराश होकर बोले कि इसमे पानी के कोई भी लक्षण नही है। यह पहले पानी हुआ करता होगा पर अब इसकी मृत्यु हो चुकी है।

“मनटोरा, आप मोबाइल क्यो नही रखती है? आपकी सीधी बात शर्मा जी से हो जाती।“ भरत के एक साथी मनोज ने पूछा। “क्या यहाँ टावर नही है?“ मनटोरा ने कहा कि ये

मोबाइल तरंगे मेरे गाँव, मेरे जंगल के लिये अभिशाप बनी हुयी है। मधुमख्खियाँ परेशान है, जंगली फलो को खाकर इतराने वाले चमगादड परेशान है, वे नाराज होकर दूर भटक रहे है। उनके न आने से जंगली पेड परागण के लिये तरस रहे है। गाँव मे बडी संख्या मे प्रवासी पक्षी आते थे। मोबाइल टावर के आने के बाद से उन्होने आना बन्द कर दिया है। यह सब देखकर मैने ठान लिया कि बहुत हो गया। अब और नही। मुझे मोबाइल नही चाहिये। मेरी देखा-देखी गाँव वालो ने भी यही किया और मोबाइल टावर उखाड दिया गया। शेष दुनिया से सम्पर्क टूट गया। पर हमारे अपनो से फिर से सम्पर्क जुड गया। सारा जंगल एक बार फिर से साँस लेने लगा। अब चलिये, राजधानी चलने की तैयारी करते है। आप मुझे कुछ समय के लिये बैगा बबा के साथ छोड दीजिये। कुछ वनस्पतियाँ एकत्र करनी है। आप लोग गाँव मे हमारा इंतजार करिये।

भरत और उसके साथी वापस गाँव की ओर चल पडे। अचानक ही उनके सामने से दो हिरण कुलाँचे मारते हुये निकल गये। मनोज का हाथ अनायस ही पिस्टल पर चला गया। उसने सोचा कि एक भी मिल जाये तो जंगल मे मंगल वाली बात हो जायेगी। इसे खाकर ही राजधानी की ओर चलेंगे। साथ चल रहे ग्रामीणो ने मनोज का इरादा भाँप लिया। उन्होने पुष्टि के लिये मनोज की आँखो मे झाँका तो उन्हे वहाँ एक लालची शिकारी बैठा नजर आया। वे झट से बोले, "साहब, ऐसा सोचना भी नही। ये रिश्तेदार है।" "रिश्तेदार, किसके रिश्तेदार?" मनोज चौक पडा। "ये मनटोरा के रिश्तेदार है। इन्हे कोई नही मार सकता।" मनोज का सारा उत्साह ठन्डा पड गया। आँखो से पकते हुये गोश्त का चित्र गायब हो गया। उस चित्र के स्थान मे मनटोरा दिखने लगी। गुस्से से भरी मनटोरा। वह तेज कदमो से अपने साथियो के साथ गाँव की ओर लौट गया।

भरत और उनके साथियो के गाँव पहुँचने के कुछ समय बाद ही दूर से मनटोरा तेज कदमो से आती दिखी। उसके पास एक बडी से गठरी थी। लगता था कि आनन-फानन मे उसने ढेरो वनस्सियाँ एकत्र कर ली थी। उसके पीछे कुछ दूरी पर बैगा बबा आते दिख रहे थे। बैगा बबा और गाँव के सियानो से आर्शीवाद लेकर मनटोरा हेलीकाप्टर मे बैठ गयी और कुछ ही पलो मे हेलीकाप्टर उड चला।

जमीन से ऊपर उठते हेलीकाप्टर को महसूस कर वह रोमांचित हो उठी। उसे अपना बचपन याद आ गया। वह बचपन जिसमे वह ऊँचाई से बेहद डरती थी। यहाँ तक कि तालाब पार से भी नीचे नही छलांग लगा पाती थी बरगद की झूलती शाखाओ को पकडकर। उसके माता-पिता उसे झाड-फूँक के लिये लेकर गये। नतीजा सिफर ही रहा। जब बैगा बबा ने बरसात मे उगने वाले कन्दो को नियमित खाने की राय दी तो मनटोरा

का डर कुछ कम हुआ। ये बरसाती कन्द ऊँचे डोंगर मे मिलते थे। मनटोरा को खुद जाकर उन्हे एकत्र करना होता था।

राजधानी पहुँचने मे ज्यादा समय नही लगने वाला था। सो, मनटोरा ने मन स्थिर करने के लिये कुछ देर प्रार्थना करने का निश्चय किया। "अरे, ये क्या है तुम्हारे हाथ मे?" भरत के प्रश्न से उसका ध्यान भंग हुआ। भरत हाथ मे गुदे गोदना के बारे मे पूछ रहा था। "क्या सोहागा तुम्हारे घर का नाम है?" मनटोरा ने कहा कि सोहागा मेरी माँ का नाम है जिसने मुझे साहसी बनाया। "क्या तुम पुराने जमाने की हो, मनटोरा? अब गोदना नही टैटू का जमाना है।" मनोज भी चर्चा मे शामिल हो गया। " मैने तो राजधानी के अखबारो मे बहुत से ऐसे विज्ञापन देखे है जिसमे अस्पतालो ने गोदना मिटाने के दावे किये है। क्या गोदना मिटाया भी जाता है?" मनोज दनादन प्रश्न पूछता रहा।

मनटोरा ने कहा कि गोदना हमारी पहचान है। एक बार गुद गया तो वह ताउम्र शरीर पर रहता है। हम उसे मिटाते नही है। आजकल के बहुत से युवा गोदना को मिटवा देते है। यह उनकी सोच है पर गोदना हमे गौरवांवित करता है। मनटोरा की बात सुनकर हेलीकाप्टर का पायलट पीछे मुडा और अपनी कलाई दिखाते हुये बोला कि बहिन, मेरे हाथ मे भी गोदना है। मै दुनिया भर घूमा पर इसे कभी मिटवाने की नही सोची।

माँ प्रकृति के जंगल अब पीछे छूट गये थे। हेलीकाप्टर नीचे उतर रहा था इंसानी कांक्रीट के जंगल के बीच। बहुत से सैन्य अधिकारी मनटोरा की प्रतीक्षा कर रहे थे। मनटोरा ने शर्मा जी को झट से भीड मे देख लिया। बिना विलम्ब वह उनके पास पहुँची और पूरी जानकारी लेने मे जुट गयी। शर्मा जी के साथ तीन और लोग थे। "इस आपरेशन को "आपरेशन नाइन" नाम दिया गया है और यह इन तीन लोगो की निगरानी मे चल रहा है। इन्हे आपरेशन तक तुम सैम वन , सैम टू और सैम थ्री के नाम से पुकार सकती हो।"

फिर तीनो की ओर मुखतिब होकर उन्होने कहा कि यही मनटोरा है जिसके बारे मे मै आपको बता रहा था। तीनो गर्मजोशी से मिले और मनटोरा को बताने लगे कि तीन और बन्धक मारे जा चुके है। आतंकवादी जानते है कि सरकार चर्चा का बहाना करके उन्हे थकाना चाहती है इसलिये वे जल्दी मे है और हत्याए करते जा रहे है। अब उन्होने दो घंटे का समय माँगा है। एक और बुरी खबर है। और वह यह कि कुछ लोगो ने एयरपोर्ट पर हमला बोल दिया है और तीन हेलीकाप्टरो को अपने कब्जे मे ले लिया है। ये आतंकवादियो के साथी है। इन्ही हेलीकाप्टरो से वे भागने की योजना बना रहे है। सरकार

इनकी माँगे मानने को तैयार नही है। बैठको का दौर चल रहा है पर समय की कमी है। कमाँडो बडी संख्या मे आ गये है और एक इशारा मिलते ही वे इमारत के अन्दर घुस सकते है पर इससे बडी हानि होने की सम्भावना है। बडी संख्या मे बन्धक भी मारे जा सकते है। यह अंतिम विकल्प है। मनटोरा, क्या तुम्हारे पास कोई योजना है? हम सोच रहे है कि इस इमारत के भीतर जहरीली गैस की अल्प मात्रा छोड दी जाये ताकि आतंकवादियो के साथ बन्धक भी बेहोश हो जाये। फिर कमाँडो कार्यवाही करके इन पर नियंत्रण कर लिया जाये।

इस पर शर्मा जी ने रुस मे किये गये ऐसे प्रयोग की याद दिलायी जिसमे जहरीली गैस का अन्देशा आतंकवादियो को लग गया था और फिर देखते ही देखते सारा मामला बिगड गया। सैन्य अधिकारी किसी भी तरह से बन्धको को हानि नही पहुँचाना चाहते थे। मनटोरा भी इस योजना के पक्ष मे नही थी। समय बीतता जा रहा था।

“शर्मा जी, आप प्रोफेसर मजूमदार को बुलवा लीजिये अपने सामानो के साथ। उनसे कहियेगा कि किट नम्बर 115 ले आये। प्रोफेसर को लाने के लिये जो गाडी भेजे उसके साथ दो बडी ट्रके भेजे और साथ मे मजबूत जवान भी। किट नम्बर 115 को ट्रको मे लादने के लिये काफी मेहनत करनी होगी।“शर्मा जी ने तुरंत अपने मातहतो को प्रोफेसर के घर की ओर रवाना कर दिया।

अन्धेरा होने लगा था। तनाव बढता जा रहा था। आतंकवादियो द्वारा तय की गयी समय सीमा खत्म होने मे एक घंटे का समय था। मनटोरा बेसब्र हो रही थी। तभी उसे सूचना मिली कि प्रोफेसर आ गये है।

थुलथुले प्रोफेसर दूर से ही दिख गये। वे परेशान थे। बन्धको की हत्या की खबरे उन्हे विचलित कर रही थी। वे लगातार जेब से कुछ निकालकर खा रहे थे। मनटोरा समझ चुकी थी कि प्रोफेसर तनाव मे है और चाकलेट खा रहे है। प्रोफेसर, तनाव और चाकलेट का गहरा नाता उनके करीबी अच्छे से जानते थे। जब उन्हे तनाव नही रहता था तब वे चाकलेट छूते भी नही थे। उनके स्वास्थ्य सलाहकार उन्हे लाख मना करते पर प्रोफेसर कहते कि चाकलेट से मेरे दिमाग को शक्ति मिलती है। सोचने की।

मनटोरा के पास पहुँचने के बाद वे कुछ बोलना चाहते ही थे कि शर्मा जी आ गये। उन्होने कहा कि मनटोरा अब कमांडो कार्यवाही के अलावा कोई चारा नही दिखता है। आतंकवादियो ने बन्धको को कतार मे खडा कर दिया। वे पूरी तैयारी मे है। बार-बार

चिल्लाकर कह रहे है कि जल्दी करो। कैसे भी तीन-चार घंटो का समय मिल जाता तो बात कुछ बन जाती है। मनटोरा, तुम कुछ कहना चाहती हो तो कहो।

“शर्मा जी, हमे कुछ अन्दर पहुँचाना है? क्या आप मदद कर सकते है?” इस पर सैम वन ने कहा कि यह तो सम्भव नही है। कही तुम जहरीली गैस वाली योजना के बारे मे तो नही कह रही हो?”

“नही, शर्मा जी आप बडे-बडे पंखो की व्यवस्था करे ताकि इमारत के अन्दर कुछ हवा जा सके। ध्यान रखे आतंकवादियो को इसकी जरा भी भनक नही लगनी चाहिये। हवा का एक तेज झोका भी चलेगा। प्रोफेसर आप अपने साथियो को बाहर ले आइये। अब उनके अन्दर जाने का समय हो गया है।“मनटोरा ने कमान सम्भाल ली।

शर्मा जी हवा के झोके की व्यवस्था मे जुट गये और प्रोफेसर एक बडा सा बक्सा लेकर हाजिर हो गये। सारे इंतजाम करके जब शर्मा जी लौटे तो उन्होने कहा, “मनटोरा सारी तैयारियाँ अब पूरी हो चुकी है। हम इमारत के पीछे से हवा भेज सकते है। बिना शोर मचाये।“ मनटोरा ने उस स्थान का मुआयना किया और फिर प्रोफेसर को तैयार रहने को कहा। “एक, दो और तीन” मनटोरा ने जैसे ही तीन कहा प्रोफेसर ने बक्सा खोल दिया। बक्से से निकले अनगिनत छोटे कीडे और वे हवा के झोके के साथ इमारत मे घुसने लगे। “अरे, ये तो मच्छर है। ये तुमने क्या किया मनटोरा?” शर्मा जी बोल पडे।

“शर्मा जी, ये प्रोफेसर की प्रयोगशाला मे जन्मे अच्छे मच्छर है। अच्छे इसलिये क्योकि ये रोग फैलाने वाले कीटाणुओ से एकदम मुक्त है। ये केवल एक ही काम करते है और वह काम है काटने का।“

इमारत मे कुछ देर बाद हलचल तेज हो गयी। मच्छरो ने अपना असर दिखाना शुरु कर दिया था। आतंकवादियो के पास एक से बढकर एक हथियार थे पर मच्छरो की सेना के आगे सारे के सारे बेकार थे। उन्होने इमारत के बारे मे सारी जानकारियाँ एकत्र की थी पर इतने मच्छर आ जायेंगे यह उन्होने सपने मे भी नही सोचा था। वे हवा मे गोली चलाते पर मच्छर भला कहाँ मरने वाले थे।

“शर्मा जी, प्रोफेसर ने इन मच्छरो मे ऐसे जीन डाले जो उन्हे उन मनुष्यो की ओर ले जाता है जो तनाव मे है। यहाँ बन्धक और आतंकवादी दोनो तनाव मे है। पर आतंकवादी

तनाव के साथ गुस्से मे है इसलिये मच्छर उन्हे ही पहले चुनेगे। प्रोफेसर ने इन्हे वैकल्पिक आहार पर लम्बे समय तक रखा ताकि शिकार मिलते ही वे उस पर टूट पडे।

“अरे, मच्छरो ने तो मुझ पर हमला कर दिया।“ये सैम टू के चिल्लाने की आवाज थी। मनटोरा ने कहा कि हडबडाइये नही सैम टू। गहरी साँसे लीजिये और तनाव को भगाइये। मच्छर अपने आप दूर हो जायेंगे।“

मनटोरा ने शर्मा जी से कहा कि हो सकता है कि उधर से कोई आपसे बात करना चाहे। जब आप बात करे तो सामने वाले को लगना चाहिये कि आप और आपके जवान भी मच्छरो से त्रस्त है ताकि उन्हे शक न हो कि मच्छर केवल उनके लिये ही छोडे गये है। मनटोरा की बात अभी खत्म ही नही हुयी थी कि सैम थ्री ने शर्मा जी से कहा कि आतंकवादी आपसे बात करना चाहते है। मनटोरा ने शर्मा जी की ओर एक बार देखा और फिर शर्मा जी फोन पर बात करने लगे।

फोन पर कुछ पलो की बात हुयी। शर्मा जी गम्भीर हो गये। मनटोरा ने पूछा कि क्या कोई नयी धमकी आयी है? शर्मा जी बोले “धमकी-वामकी नही। उन्हे ढेर सारी मच्छर भगाने वाली काइल चाहिये। वह भी तुरंत। आतंकवादी गुस्से मे थे।“

मनटोरा ने कहा, “अभी आपकी समस्या हल किये देती हूँ। जरा प्रोफेसर को बुलवाइये।“ प्रोफेसर आये तो मनटोरा ने उनसे बात करके जवानो को प्रोफेसर के पीछे भेज दिया। प्रोफेसर चाकलेट खा रहे थे यानि वे तनाव मे थे। उनकी जेब खाली रैपरो से भरी हुयी थी। उन्होने एक जवान से कहा कि जाओ और आस-पास के बाजार से और चाकलेट ले आओ। जवान इस आदेश से असमंजस मे था। उसने मनटोरा की ओर देखा तो मनटोरा ने इशारे से कहा कि प्रोफेसर की हर माँग पूरी की जाये।

प्रोफेसर ट्रक के पास गये और किट नम्बर 115 से एक बक्सा निकाला। जवानो ने शर्मा जी तक यह बक्सा पहुँचा दिया। सैम वन और सैम टू काफी देर से आपस मे बतिया रहे थे। बक्से के आते ही उन्होने खोला तो अन्दर ढेर सारी काइल के डिब्बे दिखे। उन्होने शर्मा जी को सलाह दी कि इस बक्से मे कुछ ऐसे सूक्षम यंत्र डाले जा सकते है जिससे आतंकवादियो की बात हमे सुनायी देती रहे। शर्मा जी को यह बात जँची। उन्होने मनटोरा की ओर देखा।

मनटोरा ने कहा कि चूँकि यह योजना उसकी है इसलिये केवल बक्से को ही भेजा जाना चाहिये। आतंकवादी यदि गल्ती से भी हमारी चाल को जान गये तो स्थिति उल्टी हो जायेगी। अच्छा यही होगा कि काइल अन्दर दे दी जाये ताकि वे कुछ शान्त हो सके। सैम वन और टू कुछ कहना चाहते थे पर शर्मा जी उन्हे चुप कर दिया। बक्सा अन्दर पहुँचा दिया गया।

आतंकवादियो ने बडी बारीकी से बक्से को परखा और फिर काइल निकालनी शुरु की। जगह-जगह पर काइल जला दिये गये। इतनी सारी काइल जलने से निकलने वाला धुँआ बाहर देखा जा सकता था। इस धुँए को देखकर मनटोरा और प्रोफेसर के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गयी। अब सैम वन से रहा नही गया। "क्या यह धुँआ जहरीला है?" उसने पूछ ही लिया। मनटोरा और प्रोफेसर बस मुस्कुराते रहे।

मनटोरा ने शर्मा जी से कहा कि अब पार्टी का समय है। इतने सारे जवान और दूसरे लोग है इसलिये शुद्ध देशी घी से बना खाना बनवाया जाये। इस खाने को बडे अच्छे से पैक करके लोगो को दिया जाये। इसके लिये अभी से तैयारी करनी होगी।

शर्मा जी कुछ समझे नही। उन्हे आश्चर्य लगा कि मनटोरा संकट की इस घडी मे भी मजाक कर रही है। मनटोरा ने स्थिति को सम्भालते हुये कहा कि शायद देशी घी से खाना बनाना इतने कम समय मे सम्भव न हो पर बडी मात्रा मे तेल वाले खाने की जरुरत पडेगी। आप फास्ट फूड मंगवाने की तैयारी करिये। प्रोफेसर आपको बता देंगे कि कितनी मात्रा मे क्या चाहिये।

आतंकवादियो द्वारा तय की गयी समय सीमा को खत्म होने मे अभी भी आधा घंटा शेष था पर शर्मा जी इस बात को लेकर आश्चर्य मे थे कि आतंकवादियो के रवैये मे नरमी कैसे आ गयी थी। वे न तो चिल्ला रहे थे और न ही गोलियाँ चला रहे थे। उन्होने सोचा कि हो सकता है कि मच्छरो से मुक्ति पाने के बाद अब वे कुछ देर आराम कर रहे हो। पर दूसरे ही पल उन्हे लगा कि कही यह तूफान से पहले की शांति तो नही है।

मनटोरा की तेल युक्त खाने की माँग के विषय मे तो उन्होने आदेश दे दिये थे पर उन्हे कुछ समझ नही आ रहा था। तभी उन्हे सूचना मिली कि आतंकवादी फिर से बात करना चाहते है।

शर्मा जी काफी देर तक बात करते रहे। इस बार उनके चेहरे पर निश्चिंतता के भाव थे। "तो इसलिये तुमने खाना मंगवाया है, मनटोरा। तुम्हे कैसे सब पहले से पता चल जाता

है?" शर्मा जी बात सुनकर मनटोरा मुस्कुरायी। आतंकवादियो ने बडी मात्रा मे खाना भिजवाने की माँग की थी और साथ ही धमकी दी थी कि यदि खाने मे कुछ मिलाया गया या फिर किसी और तरह की चालाकी की गयी तो उसी पल सारे बन्धको को उडा दिया जायेगा।

सैम वन, टू और थ्री मनटोरा के पास आये और बोले कि मनटोरा, दुनिया भर मे आतंकवादी हमले हुये है पर कभी भी आतंकवादियो ने खाना नही मँगवाया। वे ऐसा जोखिम कैसे उठा सकते है? फिर आजकल के आतंकवादी तो लम्बे समय तक लडने के लिये रसद लेकर चलते है। हाल ही मे हुये हमलो मे तो आतंकवादियो के सामानो मे ड्राई-फ्रुट मिले थे। फिर यहाँ कैसे उल्टी गंगा बह रही है?

मनटोरा ने कहा कि प्रोफेसर इस बारे मे बतायेंगे। प्रोफेसर ने जेब से चाकलेट निकाली और उसे मुँह मे डालते हुये अपनी बात शुरु की।

"मनटोरा जिस गाँव मे रहती है वहाँ के जगलो मे बहुत सी ऐसी वनस्पतियाँ है जो भूख बढा देती है। मनटोरा अपने बैगा बबा के साथ जंगलो से इन्हे एकत्र करती रहती है। ये वनस्पतियाँ चूर्ण या लड्डू के रुप मे खायी जाती है। जब मुझे इस विषय मे पता चला तो मैने इसे आजमाया और इनके प्रभावो को देखकर दंग रह गया। इन वनस्पतियो के पेट मे पहुँचने की देर होती है कि इनका असर शुरु हो जाता है। बैगा बबा जैसे पारम्परिक चिकित्सक इन वनस्पतियो को जटिल रोगो से उबर रहे रोगियो को देते है जिनके खाने की इच्छा मर चुकी होती है पर खाना जरुरी होता है सामान्य जीवन मे लौटने के लिये। ऐसे रोगी जो कि खा नही पाते है उन तक इन वनस्पतियो को दूसरी विधियो से पहुँचाया जाता है। इनमे से एक विधि है वनस्पतियो को एक कमरे मे जलाकर वहाँ रोगी को रखा जाता है।

यह विधि कारगर है पर इसे और अधिक कारगर बनाने के लिये हमने प्रयोगशाला मे बहुत से प्रयोग किये। हमने वनस्पतियो के उन रसायनो की पहचान की जो इस प्रभाव के लिये जिम्मेदार थे और फिर उनकी अधिक मात्रा का प्रयोग किया। हमे सफलता मिलने लगी। हमने इन सक्रिय रसायनो के साथ कई प्रयोग किये। इनमे से एक प्रयोग मच्छर भगाने वाले काइल का भी था। यह काइल मच्छर तो भगाती ही है पर जिस स्थान पर यह जलती है वहाँ बैठे लोगो की भूख जाग जाती है। वे राक्षसो की तरह भूखे हो जाते है। हमने आतंकवादियो की माँग पर ऐसी ही काइल अन्दर भिजवायी थी।

आपको याद होगा कि मनटोरा ने देशी घी का खाना मंगवाया था। इस वनस्पति युक्त काइल की यह विशेषता है कि प्रभावित व्यक्ति को तेल वाली चीजे खाने का मन करता है और जब वह ऐसी चीजो का सेवन करता जाता है तो उसकी शारीरिक गतिविधियाँ शिथिल होने लगती है। उसे नीन्द आने लगती है।"

सभी बडे ध्यान से यह सब सुन रहे थे। वे कुछ कहते इससे पहले मनटोरा ने कहा कि प्रोफेसर यदि चाहते तो इस काइल को बडे होटल मालिको को बेच सकते थे। उन्हे इसकी मुँहमाँगी कीमत मिल सकती थी। होटल वाले इन्हे जला देते। जैसे ही ग्राहक आते खाने पर टूट पडते। मनटोरा की बात सुनकर सब हँस पडे और माहौल मे हल्कापन आ गया।

गाडियाँ खाना लेकर आ गयी थी और जवान खाना अन्दर भेजने की व्यव्स्था कर रहे थे। खाने की महक पूरे वातावरण की महक बन गयी थी।

"सोचिये ऐसी वनस्पतियाँ हमारी सेना के पास हो तो कितना अच्छा होगा। दुश्मन कितना भी शक्तिशाली क्यो ने हो उसकी फौज पर एक बम गिराना होगा। धुँआ फैलेगा और सारे दुश्मन लडना छोड खाने की ओर भाग खडे होंगे।"मनटोरा ने गम्भीर होकर कहा कि सामान्य फौजी सोच के तहत हम इस खाने मे जहर या नशीली चीज मिलाकर भी भेज सकते थे पर आतंकवादियो को इतना मूर्ख नही समझना चाहिये। वे सबसे पहले बन्धको को इसे खिलायेंगे फिर पूरी तसल्ली होने के बाद खुद खायेंगे।

"कही भी बन्धक बनाये जाने की घटना होने पर शस्त्रो का जाखीरा लेकर सेना पहुँच जाती है। बन्दूक से ही समस्या का समाधान खोजा जाता है। नतीजा यह होता है कि हर बार बहुत से बन्धको को जान से हाथ धोना पडता है। ऐसे समय मे शांत रहने की जरुरत है। विवेक और तकनीक से काम लेने की जरुरत है। छत्तीसगढ की बेटी मनटोरा इसी सिद्धांत पर काम करती है।"अब प्रोफेसर के बोलने की बारी थी इसलिये उन्होने यह कह ही दिया।

तय की गयी समय सीमा समाप्त हो चुकी थी। उधर से कोई हलचल नही थी। काफी देर बाद सन्देश आया कि तीन-चार घंटे बाद अगला आदेश दिया जायेगा। खुमारी उनपर हावी होने लगी थी। शर्मा जी ने राहत की साँस ली पर मनटोरा ने कहा कि यह शांत बैठने का समय नही है। हमे उनके अगले सन्देश के आने से पहले ही इस "आपरेशन नाइन" को उसके अंजाम तक पहुँचाना होगा।

(पंकज अवधिया द्वारा रचित अप्रकाशित अंग्रेजी विज्ञान उपन्यास "ब्रेव मनटोरा" के पाँचवे अध्याय के कुछ अंशो का हिन्दी अनुवाद)

© Pankaj Oudhia